श्री गजानन महाराज परिवार

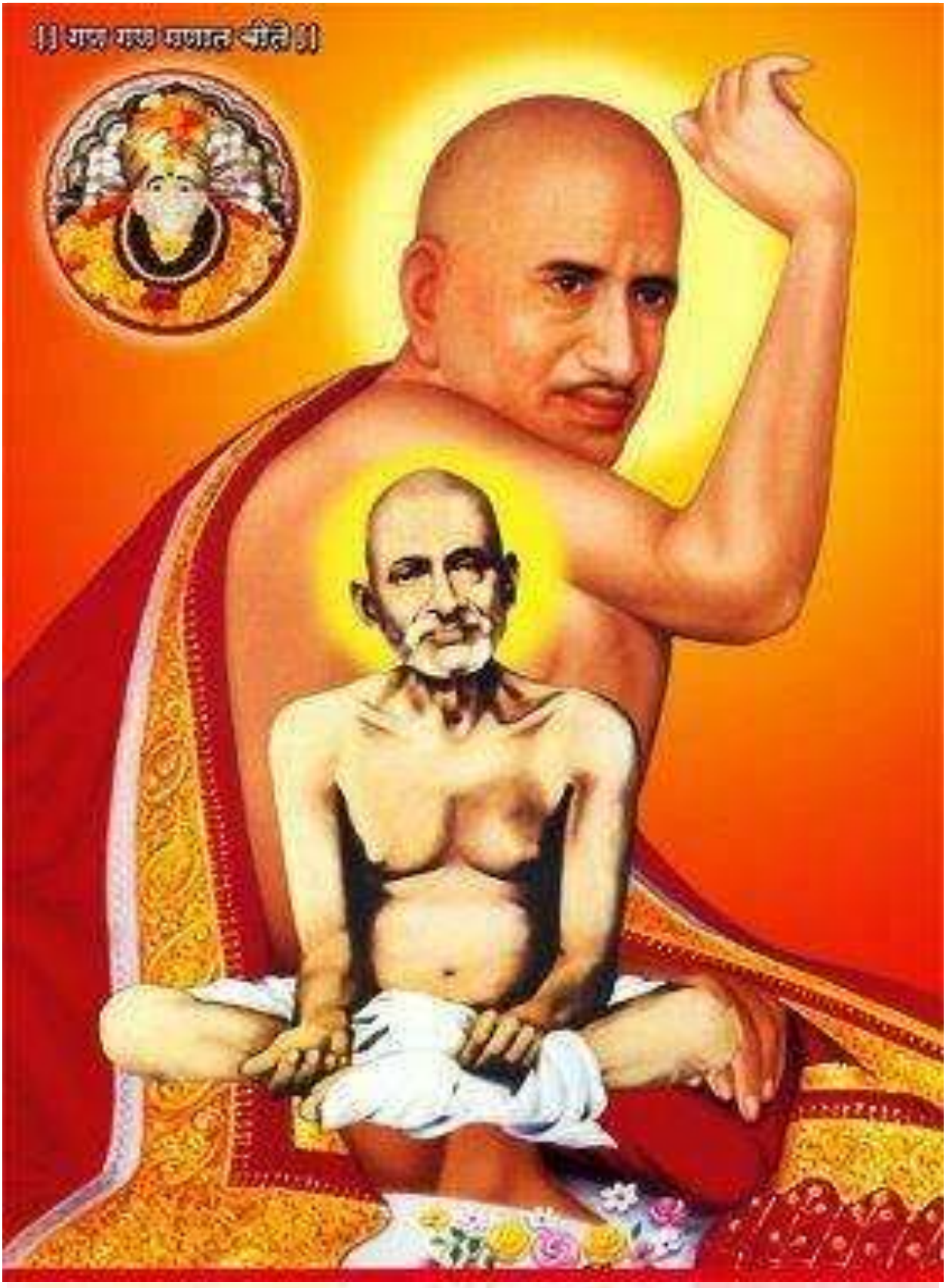

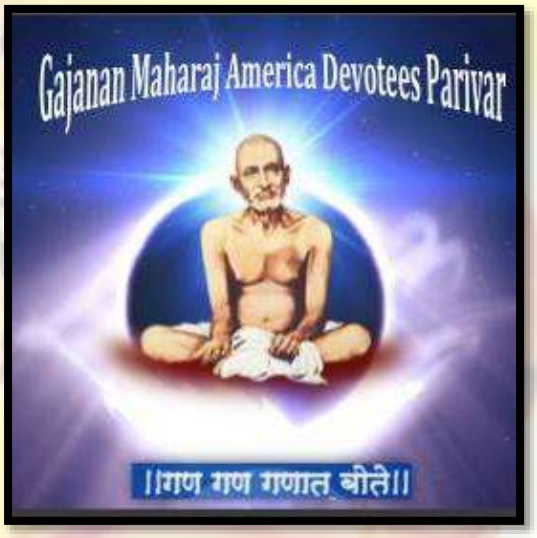

।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। श्री गजानन महाराज का गुरुवार व्रत ।।

शेगाँव के श्री गजानन महाराज महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के एक महान संत थे । वह 23 फ़रवरी 1878 को शेगाँव में प्रगट हुए और 8 सितंबर 1910 को उन्होंने महा समाधि में प्रवेश किया। 32 साल के इतने अल्प समय में उन्होंने अपनी लीला से कई भक्तों पर कृपा की । श्री गजानन महाराज के भक्तों का मानना है कि वह भगवान गणेश और भगवान दत्तात्रेय का अवतार है।पोथी में कहा हैं की महाराज समर्थ राम दास स्वामी जो शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे उनका अवतार हैं पर उसकी कोई पुष्टि नही हुइ हैं। आज भी श्री गजानन महाराज अपने भक्तों के कष्ट हरकर उनपर कृपा करते हैं।अपने भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं।

श्री गजानन महाराज का यह व्रत शीघ्र फलदायी व श्रेष्ट व्रत है।श्री गजानन महाराज का व्रत कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इस व्रत को करने के नियम भी अत्यंत सरल है। श्री गजानन महाराज अपने भक्तों की हर इच्छा पूरी करते है। उनकी कृपा से सभी की मनोकामनाएं पूरी होती है। उनके स्मरण मात्र से जीवन में आ रही बाधाओं में कमी होती है। कहा भी जाता है, कि शेगाँव वाले श्री गजानन महाराज कि महिमा का कोई और छोर नहीं है। श्री गजानन महाराज पर पूर्ण समर्पण और पूरी श्रद्धा व विश्वास होना चाहिये। पूरा विश्वास करने वालों को कभी निराशा का सामना नहीं करना पडता है।

॥ श्री गजानन महाराज के व्रत के सामान्य नियम ॥

- श्री गजानन महाराज के व्रत को कोई भी जन कर सकता है। श्री गजानन महाराज का व्रत एक बार शुरु करने के बाद नियमित रुप से ५, ७, १४, २१ गुरुवार तक किया जाता है। इस व्रत को कोई भी व्यक्ति श्री गजानन महाराज का नाम लेकर शुरु कर सकता है।
- व्रत करने के लिये स्नान करने के बाद श्री गजानन महाराज की उदी (भभूत या Ash) लगानी चाहिए और फोटो या मुर्ती की पूजा करनी चाहिए। (उदी न हो तो श्री गजानन महाराज के सामने लगाइ गइ अगरबत्ती की राख को आप महाराज का नाम लेकर इस्तमाल कर सकते हैं।)
- पूजा का स्थान स्वच्छ करके लाल कपडा (कोई छोटा रूमाल या कोई भी तरह का लाल नया कपडा लिया जा सकता है) बिछाकर श्री गजानन महाराज की तस्वीर या मूर्ती रखें ।
- श्री गजानन महाराज के चरणों व मस्तक पर चंदन या अष्टगंध या कुमकुम लगाये।
- श्री गजानन महाराज को गुलाब या अन्य सुगंधित फूल या माला चढ़ाये। दुरवा अगर उपलभद है तो दुरवा भी चढ़ाये।महाराज के सामने ईत्तर रूई में भरकर रख सकते हैं।
- अगरबती और घी का दीपक या मोमबत्ती या तेल का दीपक या अन्य दीपक जलाकर पूजा करनी चाहिए , और श्री गजानन महाराज का स्मरण करना चाहिए।
- प्रार्थना के बाद श्री गजानन महाराज का १०८ नाम, गजानन बावन्नी या गजानन चालीसा, गजानन अषटक और श्री गजानन विजय ग्रंथ का पोथी पारायण करें।पोथी में से या ३ या ७ या १३ या १४ अध्याय करना चाहीए। परीस्थिती या मनोकामना के अनुकुल पारायण करना चाहीये । या २१ वा अध्याय करना चाहीये।

३ अध्याय - स्वस्थ संबन्धित समस्या हो

७ अध्याय - बच्चा होने के लिये

१३ अध्याय - कोइ भी कष्ट हो

१४ अध्याय - आर्थीक समस्या हो

(पारायण इच्छानुसार कर सकते हैं।

1 अध्याय 21 दिन

3 अध्याय 7 दिन

7 अध्याय 3 दिन

या एक साथ 21 अध्याय एक दिन में बीच में आप चाय पानी के लिये उठ सकते हैं।)

- इसके बाद नैवेद्य अर्पण करना चाहिए। नैवेद्य में फल,मिठाई शक्कर या गुड़ या बेसन भाकर प्याज मीर्च या मोदक या खिचडी या जो भी भोजन घर में तैयार हो कुछ भी रख सकते हैं। यदी कुछ भी सम्भव ना हो तो आप एक छोटे प्याले में दूध शकर भी रख सकते है।
- ५, ७, १४, २१ यथाशक्ती दक्षिणा रखें।
- व्रत के दिन स्त्रियों को मासिक की समस्या से व्रत नहीं हो पा रहा है तो वह गुरूवार को संकल्प किये हुये गुरूवार में नही ले। इस गुरूवार के बदले अगले गुरूवार को व्रत करके संकल्प किये हुये गुरूवार पूर्ण करे।
- किसी कारणवश किसी गुरूवार को व्रत नहीं हो पाएँ तो उस गुरूवार को संकल्प किये हुये गुरूवार की गिनती में न ले। परिस्थिति अनुकूल होते ही आगे के गुरूवार को व्रत करके संकल्प किये हुये गुरूवार पूर्ण करें और उद्यापन करें।
- भूखे रहकर इस व्रत को नहीं किया जाता सकता है। इस व्रत को फलाहार ग्रहण करके किया जा सकता है, या फिर एक समय में भोजन करके किया जा सकता है। इस व्रत में कुछ न कुछ खाना जरुरी है।
- अन्य व्रत की तरह इस व्रत में भी व्रत के दिन परनिंदा, झूठ, अपशब्द प्रयोग,झगड़ा आदि नही करना चाहिए।
- अन्य व्रत की तरह इस व्रत में व्रत के दिन मदीरा व मास का सेवन नही करना चाहिए और जुआ भी नही खेलना चाहिए।

इस प्रकार व्रत करने के बाद ५, ७, १४, २१ गुरुवार तक श्री गजानन महाराज के मंदिर जाकर दर्शन करना भी शुभ रहता है। घर के निकट श्री गजानन महाराज मंदिर न हो तो साई बाबा के मंदिर जा सकते हैं। या अन्य कोई मंदीर भी जा सकते हैं।अगर कोई मंदिर निकट न हो तो ईन्टरनेट पर दर्शन कर सकते हैं । घर में भी श्री गजानन महाराज की फोटों की पूरी श्रद्धा व विश्वास से पूजा करनी चाहिए।

॥ श्री गजानन महाराज के व्रत उद्यापन ॥

श्री गजानन महाराज के व्रत की संख्या ५, ७, १४, २१ संकल्प अनुसार हो जाने पर अंतिम व्रत के दिन भी हमेशा की तरह पंचोपचार पूजा करें। अंतिम व्रत के दिन महाराज से प्राथना करें की आपकि व्रत और उद्यापन की पूजा स्वीकार करके इष्ट मनोकामना पूर्ण करें।

उद्यापन के दिन गरीब व्यक्तियों को भोजन और सामर्थ्य अनुसार दान देना चाहिए। जो भक्त विदेश में रहते हैं और अन्न दान नहीं कर सकते हैं वह अपने दोस्तों या बच्चौं को कुछ भी मीठा दे सकते हैं। या किसी भी मंदिर में प्रसाद बांट सकते हैं।

इसके साथ ही श्री गजानन महाराज की कृपा का प्रचार करने के लिये ५, ७, १४, २१ श्री गजानन पुस्तकें, अपने आस-पास के लोगों में बांटनी चाहिए। या ई-मेल भी कर सकते हैं। इस प्रकार इस व्रत को समाप्त किया जाता है।

॥ समर्थ सद्गुरु श्री गजानन महाराज की जय ॥

॥ श्री गजानन महाराज अष्टोत्तरशतनामावली ॥

ॐ अक्षय सुखाय नमः

ॐ अयोनिसंभवाय नमः

ॐ अखिलेशाय नमः

ॐ अच्युताय नमः

ॐ अभयाय नमः

ॐ अभेदाय नमः

ॐ अनंताय नमः

ॐ अभ्युदयाय नमः

ॐ अत्रिपुत्राय नमः

ॐ अखंडाय नमः

ॐ अविनाशिनेन नमः

ॐ अमरत्वाय नमः

ॐ अग्न्युत्पत्तिकराय नमः

ॐ अग्निशमनाय नमः

ॐ अथर्ववेदाय नमः

ॐ अधर्नमनाशकाय नमः

ॐ आत्मैक्याय नमः

ॐ आशुतोषाय नमः

ॐ अद्वैताय नमः

ॐ उष्णशीयपर्जन्याय नमः

ॐ उपाधिरहिताय नमः

ॐ एकदंताय नमः

ॐ ऐं वाक्यप्रदाय नमः

ॐ ऐंश्वर्याय नमः

ॐ ओंकारेश्वराय नमः

ॐ औदुंबरकल्पवृक्षाय नमः

ॐ ऋषये नमः

ॐ ऋग्वेदाय नमः

ॐ ऋणमोचनाय नमः

ॐ कलिमलहृदहनाय नमः

ॐ कर्पूरगौराय नमः

ॐ कालान्तकाय नमः

ॐ क्लीं कृष्णाय नमः

ॐ कृतज्ञाय नमः

ॐ केशवाय नमः

ॐ कैवल्यधामाय नमः

ॐ खं ब्रह्मणे नमः

ॐ गं गणपतये नमः

ॐ गणाध्यक्षाय नमः

ॐ गजाननाय नमः

ॐ गुणातीताय नमः

ॐ गोविंदाय नमः

ॐ घृष्णेश्वराय नमः

ॐ चिरंजीविने नमः

ॐ चैतन्याय नमः

ॐ जगध्दीशाय नमः

ॐ जगन्नाथाय नमः

ॐ जनार्दनाय नमः

ॐ जगध्दीताय नमः

ॐ जितेंद्रियाय नमः

ॐ जीवन्मुक्ताय नमः

ॐ तेजोमयाय नमः

ॐ तिमिरनाशकाय नमः

ॐ तत्पुरूषाय नमः

ॐ तुर्यातीताय नमः

ॐ दयानिधये नमः

ॐ द्रां दत्तात्रेयाय नमः

ॐ दिव्याय नमः

ॐ दिगंबराय नमः

ॐ दुःखभंजनाय नमः

ॐ देवाधिवाय नमः

ॐ धर्मरक्षकाय नमः

ॐ नग्नाऽवधूता नमः

ॐ नारायणाय नमः

ॐ निर्विकाराय नमः

ॐ निरंजनाय नमः

ॐ नित्यशुध्दाय नमः

ॐ पुरूषोत्तमाय नमः

ॐ पतितोध्दारकाय नमः

ॐ परमात्मने नमः

ॐ पुण्यपुरूषाय नमः

ॐ परब्रह्मस्वरूपिणे नमः

ॐ परमहंसाय नमः

ॐ प्रत्यक्षाय नमः

ॐ परोक्षाय नमः

ॐ परात्पराय नमः

ॐ प्रसन्नवदवाय नमः

ॐ परेशाय नमः

ॐ पापविमोचनाय नमः

ॐ ब्रह्मांडनायका नमः

ॐ ब्रह्मारूपाय नमः

ॐ भक्तवत्सलाय नमः

ॐ भक्ततारकाय नमः

ॐ भजनप्रियाय नमः

ॐ भागवतधर्माय नमः

ॐ भूमंडलाचार्य नमः

ॐ महादेवाय नमः

ॐ मृत्युंजयाय नमः

ॐ महासिध्दाय नमः

ॐ यजुर्वेदाय नमः

ॐ योगेश्वराय नमः

ॐ रां रामाय नमः

ॐ रामदासाय नमः

ॐ लंबोदराय नमः

ॐ विष्णवे नमः

ॐ विश्वदेवाय नमः

ॐ वेदपुरषाय नमः

ॐ वेदप्रियाय नमः

ॐ शिवस्वरूपाय नमः

ॐ शेगांवनिवासिने नमः

ॐ स्मर्तृगामिने नमः

ॐ स्मरणमात्रसंतुष्टाय नमः

ॐ सर्वयंत्रमंत्रतंत्रस्वरूपाय नमः

ॐ सर्वसंपुष्टपल्लवस्वरूपाय नमः

ॐ सर्वज्ञाय नमः

ॐ सच्चिदानंदांय नमः

ॐ सामवेदाय नमः

ॐ श्रीगुरूदेवाय नमः

ॐ हरिहराय नमः

ॐ ज्ञानेशाय नमः

अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक महाराजाधिराज योगीराज

परब्रह्म सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगावनिवासी

समर्थ सद्गुरु श्री गजानन महाराज की जय ।।

।। श्री गजानन बावन्नी ।।

जय जय सद्गुरू गजानना । रक्षक तूची भक्तजना ।।१।।

निर्गुण तूं परमात्मा तू । सगुण रूपात गजानन तू ।।२।।

सदेह तूं परि विदेह तू । देह असुनि देहातीत तू ।।३।।

माघ वद्य सप्तमी दिनी । शेगावात प्रगटोनी ।।४।।

उष्ट्या पत्रावळी निमित्त । विदेहत्व तव हो प्रगट ।।५।।

बंकटलालावरी तुझी । कृपा जाहली ती साची ।।६।।

गोसाव्याच्या नवसासाठी । गांजा घेसी लावुनी ओठी ।।७।।

तव पदतीर्थे वाचविला । जानराव तो भक्त भला ।।८।।

जानकीरामा चिंचवणे । नासवुनी स्वरूपी आणणे ।।९।।

मुकिन चंदुचे कानवलें । खाऊनि कृतार्थ त्या केले ।।१० ।।

विहिरीमाजी जलविहिना । केले देवा जलभरणा ।।११।।

मधमाश्यांचे डंख तुवा । सहन सुखे केले देवा ।।१२।।

त्यांचे काटे योगबले । काढुनी सहजी दाखविले ।।१३।।

कुस्ती हरिशी खेळोनी । शक्ती दर्शन घडवोनी ।।१४।।

वेद म्हणूनी दाखविला । चकित द्रविड ब्राह्मण झाला ।।१५।।

जळत्या पर्यकावरती । ब्रह्मगिरीला ये प्रचिती ।।१६।।

टाकळीकर हरिदासाचा । अश्व शांत केला साचा ।।१७।।

बाळकृष्ण बालापूरचा । समर्थ भक्तचि जो होता ।।१८

रामदास रूपे त्याला । दर्शन देवुनि तोषविला ।।१९।।

सुकलालाची गोमाता । व्दाड बहू होती ताता ।। २०।।

कृपा तुझी होतांच क्षणी । शांत जाहली ती जननी ।। २१।।

घुडे लक्ष्मण शेगांवी । येता व्याधी तूं निरवी ।। २२।।

दांभिकता परि ती त्याची । तू न चालवुनि घे साची ।। २३।।

भास्कर पाटील तव भक्त । उद्धरिलासी तू त्वरित ।। २४।।

आज्ञा तव शिरंसा वंद्य । काकहि मानति तुज वंद्य ।। २५।।

विहिरीमाजी रक्षियला । देवा तूं गणू जवग्राला ।। २६।।

पितांबराकरवी लीला । वठला आंबा पल्लविला ।। २७।।

सुबुद्धी देशी जोश्याला । माफ करी तो दंडाला ।। २८।।

सवडद येथील गंगाभारती । थुंकुनि वारिली रक्तपिती ।। २९।।

पुंडलिकाचे गंडांतर । निष्ठा जाणुनि केले दूर ।। ३०।।

ओंकारेश्वरी फुटली नौका । तारी नर्मदा क्षणांत एका ।। ३१।।

माधवनाथा समवेत । केले भोजन अदृष्य ।। ३२।।

लोकमान्य त्या टिळकांना । प्रसाद तूंची पाठविला ।। ३३।।

कवर सुताची कांदा भाकर । भक्षिलीस त्या प्रेमाखातर ।। ३४।।

नग्न बैसुनी गाडीत । लीला दाविली विपरीत ।। ३५।।

बायजे चित्ती तव भक्ती । पुंडलिकावर विरक्त प्रीति ।। ३६।।

बापुना मनी विठ्ठल भक्ती । स्वये होशि तूं विठ्ठल मूर्ति ।। ३७।।

कवठयाच्या त्या वारकऱ्याला । मरीपासूनी वाचवीला ।। ३८।।

वासुदेव यति तुज भेटे । प्रेमाची ती खूण पटे ।। ३९।।

उद्धट झाला हवालदार । भस्मिभूत झाले घरदार ।। ४०।।

देहांताच्या नंतर ही । कितीजणा अनुभव येई ।। ४१।।

पडत्या मजुरा झेलियेले । बघती जन आश्चर्य भले ।। ४२।।

अंगावरती खंब पडे । स्त्री वांचे आश्चर्य घडे ।। ४३।।

गजाननाच्या अद्भुत लीला । अनुभव येती आज मितीला ।। ४४।।

शरण जाऊनी गाजानना । दुःख तयाते करी कथना ।। ४५।।

कृपा करी तो भक्तांसी । धावुनी येतो वेगेसी ।। ४६।।

गजाननाची बावन्नी । नित्य असावी ध्यानीमनी ।। ४७।।

बावन्न गुरूवारी नेमे । करा पाठ बहु भक्ती ने ।। ४८।।

विघ्ने सारी पळती दूर । सर्व सुखाचा येई पूर ।। ४९।।

चिंता सा़ऱ्या दूर करी । संकटातुनी पार करी ।। ५०।।

सदाचार रत सद्भक्ता । फळ लाभे बघता-बघता ।। ५१।।

भक्त बोले जय बोला । गजाननाची जय बोला ।। ५२।।

जय बोला हो जय बोला । गजाननाची जय बोला ।।

अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक महाराजाधिराज योगीराज

परब्रह्म सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगावनिवासी

समर्थ सद्गुरु श्री गजानन महाराज की जय ।।

।। श्री गजानन चालीसा ।।

अद्भुत कृतियाँ प्रकृति ग्रंथ में , अगणित वर्णित हैं जिनकी ॥
कतिपय कृतियाँ चालीसा में , वर्णन करता मैं उनकी ॥१॥

प्रभो गजानन शरण आपकी , अटूट सेवा भक्ति मिले ॥
सौंप दिया यह जीवन सारा , चरण शरण तब शक्ति मिले ॥२॥

माघ महीना कृष्ण सप्तमी , शके अठारह सौ ही था ॥
तारीख तेवीस फ़रवरी महीना , वर्ष अठारह अठोत्तर था ॥३॥

प्रगटे थे शेगाँव गाँव में , अंत काल तक वहीं रहे ॥
इसके पहले काशी में थे, दीक्षित सन्यासी रहे ॥४॥

प्रथम बताया अन्न ब्रह्म है , पानी ईश्वर कहाँ नहीं ॥
गणिगण कहते करवाते थे , राम भजन भी कहीं कहीं ॥५॥

महाभागवत सुना संत मुख , तुंबे जल ने चकराया ॥
जानराव जब मरण तोल थे , चरण तीर्थ से बच पाया ॥६॥

चिलम जली जब बिना आग से , सुना अलौकिक गुण भारी ॥
जन समूह तो अपार उमड़ा , दर्शन लेने सुख कारी ॥७॥

इनकार किया जब सुनार ने , उसने वैसा फल पाया ॥
कान्होला की करी माँग जब , माह पुराना भी आया ॥८॥

मन्त्र उजागर हेतु अचानक , विप्र वेद पाठी आए ॥
यह भी गुरु की महिमा ही थी , मानो स्वयं बुला लाए ॥९॥

उठ बैठा जब मरा श्वान भी , शुष्क कूप में जल आया ॥
आया जल भी अथाह उसमें , जन समूह बहु चकराया ॥१०॥

भाग गया सारा जन समूह , स्वामीजी तो रहे अड़े ॥
टूट पड़ी मधु मक्खियाँ काँटे , श्वास रोक से निकल पड़े ॥११॥

महापुरुष नरसिंह देव को , ईश तत्व का ज्ञान दिया ॥
कर्म भक्ति अरूयोग पंथ से , मिलते प्रभु हैं समझ लिया ॥१२॥

गर्व ना आवे निज निज पथ में , अवश्य सिद्धि उसे मिलती ॥
कमल पत्र सम जग में रहते , शांति संत को तब मिलती ॥१३॥

भास्कर खंडु बड़े भक्त थे , सेवा स्वामी की करते ॥
अन्य बंधु तो हँसी उड़ाते , हारे पर सतपथ धरते ॥१४॥

खंडुजी को पुत्र नहीं था , गुरु प्रसाद से पुत्र हुआ ॥
जेल कष्ट था खंडुजी को , गुरु कृपा से कुछ ना हुआ ॥१५॥

स्वामीजी के मुख से निकली , वेद रुचाए घबराए ॥
भुसुर भागे ऐसे भागे , निज ग़लती पर पछताये ॥१६॥

गुरुजी क्या रामदास भी , बालकृष्ण को चकराया ॥
बाद दिखाकर निज स्वरूप भी , समझ इसे भक्तन पाया ॥१७॥

रामदास का श्लोक श्रवण कर , गुरु गजानन के मुख से ॥

कभी गजानन रामदास के , रूप दिखाए अंतर से ॥१८॥

पुनः स्वप्न में समरथ आए , मेरा रूप गजानन है ॥
कभी ना लाना मन में संशय , समरथ रूप गजानन है ॥१९॥

बालापुर में एक गाय थी , सबको थी वह दुख देती ॥
किसी तरह गुरुजी तक लाए , सबको छूने अब देती ॥२०॥

इस आश्रम में रही हमेशा , संतति उसकी अब भी है ॥
कृत्य अलौकिक योगीजी के , अमर सर्वदा अब भी है ॥२१॥

पंडितजी के घोड़े की भी , छुडा दुष्टता भी दी थी ॥
गुरु शरण में पंडित आए , चरण वंदना अति की थी ॥२२॥

गुरुकृपा ने भास्कर जी को , प्राण छूटते मोक्ष दिया ॥
अन्न दान भी स्वयं गुरु ने , भूखों को भर पेट दिया ॥२३॥

याद किया जब गणु भक्त ने , रक्षा कर उपदेश दिया ॥
बच्चु गुरु को वस्त्राभूषण , देते गुरु ने नहीं लिया ॥२४॥

छोड गये सब वस्त्राभूषण , हमको इससे लाभ नहीं ॥
हम तो केवल भक्ति चाहते , धन दौलत का काम नहीं ॥२५॥

बंडु तात्या विप्र नाम का , क़र्ज़ भार से घबराया ॥
आत्म हत्या करना सोचा , गुरु ने तब धन बतलाया ॥२६॥

उसी द्रव्य से क़र्ज़ मुक्त हो , गुरु से सच्चा ज्ञान लिया ॥
अनेक लीला बंकट के घर , करके सच्चा ज्ञान दिया ॥२७॥

बीच नर्मदा नाव गयी जब , बड़े छेद से जल आया ॥
मातु नर्मदा इन्हे देख कर , स्वयं दिखाई निज माया ॥२८॥

सबको धीरज दिया संत ने , और कहा रेबा चतुराई ॥
जहाँ संत है वहाँ पुण्य है , पुण्य ना होता दुख दाई ॥२९॥

रोटी त्र्यंबक भाऊ भक्त की , बड़े प्रेम से खाई थी ॥
इस भोजन की करी प्रतीक्षा , गुरुजी को जो भाई थी ॥३०॥

तुकारम के सिर में छर्रा , उसको बेहद पीड़ा थी ॥
गुरुकृपा से गिरा कान से , हटी पुरानी पीड़ा थी ॥३१॥

सुना गया है रेल भ्रमण में , हठ योगी तहे कहलाए ॥
तिलक सभा में सभापति थे , राज योगी भी कहलाए ॥३२॥

आम्र पेड़ पर गुरुजी ने तो , बिना ऋतु फल बतलाया ॥
गुरु कृपा से पीताम्बर ने , वृक्ष हरा कर दिखलाया ॥३३॥

कोंडोली में यही वृक्ष भी , आज अधिक फल देता है ॥
कुछ ना असंभव गुरु कृपा से , आशीष गुरु की लेता है ॥३४॥

पहुँचे जीवन मुक्त स्थिति में , शरीर का कुछ भान नहीं ॥
चरित्र उनके बड़े अलौकिक , भोजन का भी ध्यान नहीं ॥३५॥

भादव महीना शुक्ल पंचमी , शके अठारह बत्तीस था ॥
गुरुवार था देह त्याग का , सन् भी उन्नीस सौ दस था ॥३६॥

अस्तित्व हमारा यहीं रहेगा , भले देह से छुटकारा ॥
समाधी अंदर देह रहेगा , बाहर आतम उजियारा ॥३७॥

योगी ही थे गुरु गजानन , अब भी वे दर्शन देते ॥
समाधी का जो दर्शन करते , उनकी अब भी सुधि लेते ॥३८॥

बनी हुई शेगाँव गाँव में , समाधी जो सब ताप हारे ॥
दर्शन करने जो भी जाते , उन सबके दुख हरण हारे ॥३९॥

जगह जगह पर गुरु गजानन , मंदिर बनते जाते हैं ॥
नित्य नियम जो दर्शन करते , सातों सुख वे पाते हैं ॥४०॥

कृत्य अलौकिक योगीजी के , नत मस्तक स्वीकार करो ॥
शीश झुका है गुरु चरणों मे , मम प्रणाम स्वीकार करो ॥

दोहा

श्रवण करे या नित पढ़े, गुरु की महिमा कोए
उसकी पूरण कामना , जो भी मन में होये.

॥ अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक महाराजाधिराज
योगीराज परब्रह्म सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगावनिवासी
समर्थ सद्गुरु श्री गजानन महाराज की जय ।।

।। श्री गजानन महाराज अष्टक ।।

गजानना गुणागरा परम मंगला पावना,
अशीच अवघे हरी दुरित तेवि दुर्वासना !
नसे त्रिभुवनामध्ये तुजविणे आम्हां आसरा,
करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा !!

निरालसपणे नसे घडली अल्प सेवा करी,
तुझी पतितपावना भटकलो वृथा भूवरी !
विसंबत न गाय ती आपुलिया कधी वासरा,
करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा !!

आलास जगी लावण्या परतुनी सुवाटे जन,
समर्थ गुरुराज ज्या भूषवी नाम नारायण !
म्हणून तुज प्रार्थना सतत जोडूनिया करा,
करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा !!

क्षणांत जल आणिले नसून थेंब त्या वापिला,
क्षणांत गमनाप्रती करिसी इच्छीलेल्या स्थला !
क्षणांत स्वरूपे किती विविध धरिसी धीवरा,
करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा !!

अगाध करणी तुझी गुरुवरा न लोकां कळे,
तुला त्यजून व्यर्थ ते आचरितात नाना खुळे !
कृपा उदक मागती त्यजुनी गौतमीच्या तीरा,

करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा !!

समर्थ स्वरूपाप्रती धरुनी साच बाळापुरी,
तुम्ही प्रकट जाहला सुशील बालकृष्णा घरी !
हरी स्वरूप घेवूनी दिधली भेट भीमातीरा,
करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा !!

सच्छिद्र नौके प्रती त्वन्दीय पाय हे लागतां,
जलांत बुडता तरि तिजसी नर्मदा दे हातां !
अशा तुजसि वाणन्या नच समर्थ माझी गिरा,
करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा !!

अतां न बहु बोलतां तव पदांबुजा वंदितो,
पडो विसर न कदा मदीय हेच मी मागतो !
तुम्ही वरद पुला कर धरा गणूच्या शिरा,
करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा. !!!!

अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक महाराजाधिराज
योगीराज परब्रह्म सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगावनिवासी
समर्थ सद्गुरु श्री गजानन महाराज की जय ।।

।। श्री गजानन महाराजांची आरती ।।

जय जय सतचितस्वरूपा स्वामी गणराया । अवतरलासी भूवर जड़ -मूढ ताराया ॥

जयदेव जयदेव ॥ धृ.॥

निर्गुण ब्रह्म सनातन अव्यय अविनाशी । स्थिरचर व्यापुन उरले जे या जगतासी

तें तूं तत्त्व खरोखर नि:संशय अससी । लीलामात्रे धरिले मानवदेहासी ॥ १ ॥ जय

होऊं न देशी त्याची जाणिव तूं कवणा । करुनि 'गणि गण गणात बोते ' या भजना ।

धाता हरिहर गुरुवर तूंचि सुखसदना । जिकडे पाहावे तिकडे तूं दिससी नयना ॥ २ ॥ जय

लीला अनंत केल्या बंकटसदनास ।पेटविले त्या अग्नीवाचुनि चिलमेस ।

क्षणांत आणिले जीवन निर्जल वापीस । केला ब्रह्मगिरीच्या गर्वाचा नाश ॥ ३ ॥ जय

व्याधी वारून केले कैकां संपन्न । करविले भक्तालागी विट्ठलदर्शन ।

भवसिंधु हां तरण्या नौका तव चरण । स्वामी दासगणूचे मान्य करा कवन ॥ ४ ॥ जय

।। कर्पूरा आरती ।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारम् भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

कर्पूर पूरेण मनोहरेण सुवर्ण पत्रे रजसंस्कृतेन
प्रदित्त वासाय वससाय नित्यं निराजनं तेत् जगदिष कुर्यात् ॥

।। प्रार्थना ।।

सदा सर्वदा, योग तुझा घड़ावा, तुझे कारणी देह माझा पड़ावा ।
उपेक्षु नको गुणवंता अनंता, रघुनायका मागणे हेचि आता ।।

उपासनेला दृढ़ चालवावे भू-देव संतासी सदा नमावे ।
सत्कर्म योगे वय घालवावे, सर्वा मुखी मंगल बोलवावे ।।

ज्या ज्या ठिकाणी मन जाए माझे, त्या त्या ठिकाणी निज रूप तुझे ।
मी ठेवितो मस्तक ज्या ठिकाणी, तेथे तुझे सद्गुरु पाय दोन्ही ।।

।। क्षमा प्रार्थना ।।

यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानिच |
तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणा पदे पदे ||

आवाहनं न जानामि न जानामि तव अर्चना |
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ||

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर |
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ||

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम |
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर ||

ॐ एकदंताय विद्महे वक्रतुंडाय धीमही
तन्नो दंतीः प्रचोदयात्
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमही
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्
ॐ भास्कराय विद्महे सहस्त्रयुति कराय धीमही
तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्
ॐ महालक्ष्मीच् विद्महे विष्णुपत्नीच् धीमही
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्

ॐ दिगंबराय विद्महे अत्रीपुत्राय धीमही

तन्नो दत्तः प्रचोदयात्

ॐ परं पुरुषाय विद्महे पावमानाय धीमही

तन्नो गजानन प्रचोदयात्

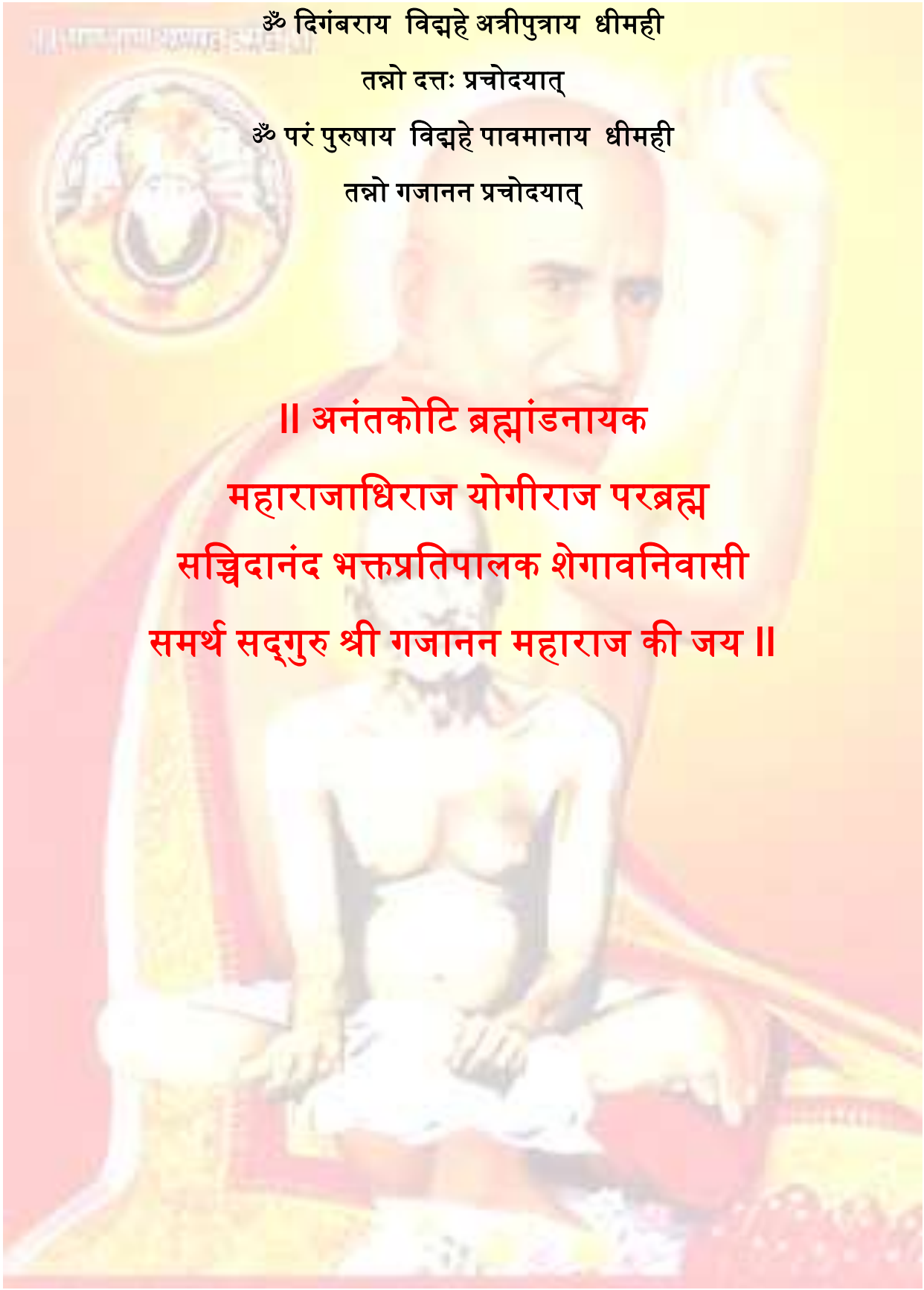

॥ अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक

महाराजाधिराज योगीराज परब्रह्म

सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगावनिवासी

समर्थ सद्गुरु श्री गजानन महाराज की जय ॥